

शिव चित्र में वर्णित प्रतीकों की वैदिक व्याख्या

प्रवचनकर्ता: आचार्य सानन्द जी

शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः ।

मा द्यावापृथिवीऽअभि शोचीर्मन्तरिक्षं मा वनस्पतीन् ॥

यजुः ११:४५

शिवा भव पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा ।

शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय शिवा न इहैधि ॥

अथर्व ३:२८:३

प्रतीकों की उपासना विषय से संबंधित इस कक्षा में आप सभी महानुभावों का हार्दिक स्वागत है। कैलाशपति महाराजा भगवान शिव के आंतरिक, आध्यात्मिक जीवन का प्रतीकात्मक स्वरूप शिव चित्र में शिव चरित्र के विज्ञानपूर्ण प्रतीकात्मक चिन्ह दिखाए गए हैं। शिव चित्र में शिवचरित्र के यानी उनके आंतरिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और आत्मिक जीवन का स्वरूप चित्रांकित किया गया है जिसे उनकी प्रतिमा में उनकी चित्राकृति में और उनके चित्र के अंदर जो जो प्रतीकों के चयन किए गए हैं उनमें दिखाया गया है कि वह व्यक्ति अपने जीवन में आंतरिक स्तर पर किस प्रकार से जीता था? वह सोचता कैसे था? वह कैसे चिंतन करता था? वह क्या मनन करता था? वह लोक के प्रति संसार के प्रति जगत के प्रति क्या अपने भीतर धारणा भावनाएं बना के रखता था? उसके बारे में उनके चित्र में जो जो प्रतीक दिखाई देते हैं, उन प्रतीकों के द्वारा गहरा सूक्ष्म विज्ञान, विशेष ज्ञान प्रकट किया गया है। सो आइये आज हम इस बैठक में कक्षा में उस विषय पर थोड़ा विचार करें।

भगवान शिव के चित्र को जब हम देखते हैं तो उसमें कई चीजें कई विभूतियाँ हमें दिखाई देती हैं। उनके शिर के ऊपर जटाजूट में से गंग धारा बह रही है; उनके भाल पर, ललाट पर चंद्रमा विराजमान है; उनके दोनों भोहों के मध्य तिलक स्थान पर तीसरा नेत्र दिखाई देता है जिससे उन्होंने काम को भस्म किया कामदेव का विनाश किया और उनके गले के अंदर हलाहल विष जिसके कारण उनका कंठ नीला है इसलिए उनका नाम नीलकंठ भी पड गया; और गले में विषधर काला नाग, एक हाथ में डमरू और दूसरे हाथ में त्रिशूल। यह सारे जो उनके शरीर में चिह्न हैं, यह किस बात को बताते हैं, यह प्रतीक किस और इशारा करते हैं? इस कक्षा के अंदर इस रहस्य को समझने का प्रयास करेंगे।

भगवान शिव के बारे में जैसा सुना जाता है; मैं उन्हे भगवान इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि भग शब्द का मतलब होता है ऐश्वर्य और ऐश्वर्य कहते हैं ज्ञान को, ऐश्वर्य कहते हैं विज्ञान को, ऐश्वर्य कहते हैं धन, वैभव, सम्पदा, सम्पत्ति को। जैसे धन सम्पदा है सम्पत्ति है वैसे ही मनुष्य का ज्ञान उसकी सम्पदा सम्पत्ति है। धन को खर्च करने से वह बढ़ता नहीं जो हाथ में है वह चला ही जाता है परंतु ज्ञान रूपी सम्पदा को खर्च करने से वह घटती नहीं वह निरन्तर बढ़ती ही जाती है। यह ज्ञान में धन से विशेषता है। तो भगवान शिव के पास में बहुत ज्ञान था। जैसा कि चरक संहिता पढ़ते हैं तो चरक संहिता के अंदर आयुर्वेद के महान ग्रन्थ हैं। जब इस आयुर्वेद के

इस महान ग्रन्थ के निर्माण के सम्बन्ध में सारे ऋषिओं की एक समीति एक बैठक होती है तो उस सभा के अन्दर महाराजा शिव भी विराजमान होते हैं। वह कैलाश के पति हैं; वह पार्वती के पति हैं; वह कैलाश के महाराजा हैं। ज्ञान और विज्ञान की दृष्टि से उनका व्यक्तित्व महान है। हर व्यक्ति उनसे जीवन के गुर समझने के लिए लालायित रहता है।

वाल्मीकि रामायण हम पढ़ते हैं तो वहाँ पर भगवान राम त्रेता युग में महाराजा शिव की बहुत प्रशंसा करते हैं और उनकी पूजा अर्चना भी करते हैं। यह उस समय की बात है जिस समय भौतिक विज्ञान के साथ साथ भारत का आध्यात्मिक विज्ञान भी चरम सीमा पर था। वह वो युग था जिस युग के अन्दर, दूर बैठे मनुष्य के मन की भावनाओं को दूर बैठा मनुष्य साधना से उपलब्ध अविष्कारों, साधना से उपलब्ध योग्यताओं, साधना से उपलब्ध विभूतिओं, सिद्धिओं के द्वारा जान किया करता था। एक प्रसंग सुनने में आता है। वाल्मीकि और माता सीता के बीच में जो वार्ता होती है। यद्यपि टी.वी. में मैंने देखा; वह हकीकत है भी या नहीं कभी जाँचने का अवसर नहीं मिला। लेकिन जिस चीजको हम आज भी महसूस करते हैं उसमें कोई संदेह नहीं। जब माता सीता बड़े दुखी मन से वाल्मीकि आश्रम में निराश होकर पति श्री रामचंद्र जी का स्मरण कर रही थी तो महर्षि वाल्मीकि दूर से उनके मुखारविंद को देखकर उनकी दुःखी भाव मुद्रा को पढ़कर उनके निकट आकर समीप आकर उनसे कहते हैं कि बिटिया तुम इस समय किस शोक में डूबी हुई हो और शोकाकुल होकर तुम किसे स्मरण कर रही हो? जब यह भगवान वाल्मीकि ने माता सीता से कहा तो उन्होंने कहा कि हे ऋषिवर! मैं इस समय दुःखी हूँ और दुःखद हृदय से मैं अपने पति को स्मरण कर रही हूँ, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को स्मरण कर रही हूँ। तो मुनिवर महर्षि वाल्मीकि ने कहा पुत्री जब कोई भी इन्सान दुःखी हृदय से अपने स्वजन को स्मरण करता है तो उसके हृदय की जो तरंगें हैं उसके मन उसके चित्त की जो भाव तरंगें हैं वो तरंगें समिष्टि मनस् तत्त्व से जुड़कर उस व्यक्ति के मन तक पहुँच ही जाती हैं। तो यदि तुम दुःखी हृदय से राम को याद करती हो तो अवश्य राम उस राजकार्य को करते हुए वहाँ भी दुःखी होंगे। या वह दुःखी हृदय से तुम्हें स्मरण कर रहे हैं तो तुम यहाँ पर भी उस दुःख को अनुभव कर रही हो। मैं आपको स्मरण कर रहा हूँ और अचानक आपका फोन आ जाता है तो मैं कहता हूँ अरे मैं तो आपको याद ही कर रहा था और आपका फोन आ गया। यह वही विज्ञान है। आप मुझे याद कर रहे हैं और मैंने फोन कर दिया आप कहते हैं कि अजी हम तो आपको याद ही कर रहे थे; आपकी तो बड़ी लम्बी उम्र है। यह वही विज्ञान है। यह आज भी स्पष्ट है।

विज्ञान नष्ट नहीं होता। वह सूक्ष्म रूप में दबा हुआ रहता है; कोई उसे उघाड़ देता है तो वह प्रकट हो जाता है। और कोई उघाड़ने का प्रयास नहीं करता तो वह छिपा का छिपा ही रह जाता है। तो वह विज्ञान आज भी है। तो वह साधना से प्राप्त विज्ञान का महान युग था। उस समय भगवान शिव का स्मरण राजा रामचन्द्र जी करते हैं और स्मरण करके उनसे प्रार्थना करते हैं। भावनाओं की तरंगों में विश्वास का एक अद्भुत स्पर्श होता है। जिस व्यक्ति में हमारी निष्ठा और आस्था होती है; जो व्यक्ति हमसे सच्चा प्रेम और सच्चा हमारा हित चाहता है; जो हम पर अति करुणावान होता है; और हमारे व्यक्तित्व के कारण से हमारी उदारता और हमारे समाजिक कल्याण के उत्कृष्ट व्यक्तित्व को जानकर हमारी मदद के लिए सदैव आतुर रहता है उस व्यक्ति की जो हमारे प्रति भावनाओं का प्रेषण होता है वह भावनाएं हमारे हृदय के अन्दर एक अटूट आत्मविश्वास पैदा करती हैं। और आत्मविश्वास से व्यक्ति में उत्साह जागृत होता है। और उत्साह व्यक्ति के सत्य को कई गुना बढ़ा देता है। निरुत्साहित व्यक्ति शक्ति, सामर्थ्य और साधनों के होते हुए भी जीवित होकर भी मृतवत् हो जाता है। सबल होकर भी निर्बलवत् हो जाता है। लेकिन उत्साहवान व्यक्ति साधनहीन होते हुए शक्तिहीन होते हुए भी उत्साह

की शक्ति से ही अपने आप को शक्तिवान बना लेता है। बलहीन बलवान कर लेता है। और हारा हुआ व्यक्ति भी उत्साह से भरकर पुनः संघर्ष कर जीत को हासिल कर लेता है। तो उत्साह एक बहुत बड़ी चीज है। तो किसी की प्रार्थना करने से जिसकी प्रार्थना कर रहे हैं उससे हमें उत्साह विश्वास मिलता है। जो विश्वास हमें उस मार्ग पर चलने की शक्ति देता है।

तो भगवान शिव की उपासना की एक बड़ी लम्बी परम्परा चली आ रही है। यहाँ तक की मैं जब आर्य समाज से जुड़ा नहीं था और पौराणिक परिवार में था तो मेरे मन में भी भगवान शिव के प्रति बड़ी आस्था थी। और इस चीज का उदाहरण यह है कि उस समय अपने ही गाँव में मैंने मन्दिर में एक चित्र बनाया था शिव जी का और वह चित्र आज भी है। करीबन आज उसको कुछ तेरह चौदह साल हो गए हैं। लोगों ने उसको मिटाने नहीं दिया। तो उस समय यह तो पता नहीं था कि शिव का वास्तविक अर्थ क्या है वह समय तो वही जो सुनते आए थे कि वह तो भांग पीने वाले हैं उनकी पत्नी भांग बांटती है और शिव भांग पीते हैं और भोले भंडारी हैं वह तो किसी के भी बहाव में बह जाते हैं लेकिन अधिक क्रोधित भी हैं उन्होंने कामदेव को अपने तीक्ष्ण तृतीय नेत्र की ज्वाला से भस्म कर दिया तो यह बातें सुनकर ऐसा लगता था कि जैसा चित्र है वैसे ही शिव होंगे हैं लेकिन लंबे समय तक सोचते सोचते सोचते अचानक भगवान ने भीतर यह समझ पैदा की कि यह चित्र वास्तविक शिव का नहीं है यह चित्र उस शिव की वास्तविक आन्तरिक जो जीवन शैली है उस जीवन शैली को प्रतीकों में पिरोकर निर्मित किया गया है। कि शिव ने ही अपने आन्तरिक चिन्तन को चित्र के रूप में चित्रांकित किया हो कि यह देखो मैं ऐसा हूँ। मैं इस ढंग से सोचता हूँ; मैं इस ढंग से जीवन को जीता हूँ। मेरा जीवन इस प्रकार का है; मेरा चिन्तन इस प्रकार का है। तुम भी चाहो तो शिव बन सकते हो।

शिव शब्द का अर्थ हमारे यहाँ बड़ा अद्भुत है; कल्याणकारी, कल्याण करने वाले व्यक्ति का नाम शिव है। और किसका कल्याण? प्रजाओं का कल्याण। कौन सी प्रजाओं का? मानुषी प्रजाओं का कल्याण। और मानुषी प्रजा के लिए जो भी हितकर है वह सबकी रक्षा उन सबका हित उन सबका कल्याण। किन्तु मानुषी प्रजा मनुष्य का कल्याण तब हो सकता है जब मनुष्य को सारे साधन उपलब्ध हों। चाहें वह ओषधियाँ हों, चाहें वह खाद्य पेय पदार्थ, चाहें वह घी दूध देने वाली गौवं हों, चाहें वह ऊन देने वाली भेड़े हों, चाहें वह सामान लादने वाले गधे और ऊँट हों, चाहें फिर वह अश्व घोड़े हों रथ को हाँकने वाले, चाहें वह हाथी गजराज हो, चाहें वह सोना चाँदी आदि धातु हो, चाहें वह गृह में आवश्यक संसाधन हो। जो भी कुछ है जीवन में उन सबको ध्यान में रखकर जो व्यक्ति सम्पूर्ण मानवता के हित में तत्पर होता है उस महामानव को शिव कहते हैं। और जगतपिता विधाता ने, विश्व निर्माता वसुधा पति परमेश्वर ने सृष्टि के आदि में मनुष्य मात्र को यह उपदेश दिया कि मेरे बच्चों मेरी बच्चियों मेरे बेटे बेटियों पुत्र पुत्रियों तुम सब शिव बनो। शिव क्या है? तो कहा “शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः”, “शिवो भव” हे मनुष्यों तुम शिव बन जाओ। किसके लिए बन जाओ? “प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः” मेरे अंगों के रस हे मनुष्य मानव। हम भगवान के अंगों के रस हैं। यह सारा ब्रह्माण्ड भगवान का शरीर है। और भगवान के शरीर इस ब्रह्माण्ड से जो पाँच भौतिक हैं, जो जड़ प्रकृति के असंख्य विकारों से निर्मित, जिसमें हम जी रहे हैं यह विविधाकार जगत है। इसी से हमारा शरीर बना है। पाँच भौतिक हमारी देह है। तो यह परमात्मा का ही रस है। यह उनकी भावना उनकी कल्पना उनके आन्तरिक चिन्तन का ही चित्रण मनुष्य का शरीर है। इसलिए कहा “त्वम् अंगिरः” तुम मेरे अंगों के रस हो। और तुम क्या करो; मेरे जैसे तुम भी बनो। भगवान कहते हैं परम कारुणिक दयामय दयासागर करुणा के महासागर परम कल्याणकर्ता। इसलिए कहा है इस बात को। कि तुम भी शिव बनो। जैसे ईश्वर शिव है, जैसे

परमात्मा शिव है, वैसे हम भी शिव बने। और कहा इस बात को संध्या के मन्त्रों में “नमः शिवाय च शिवतराय च” यह मन्त्र के अन्तिम में जो शिवाय शिवतराय बात कही गई है; स्वयं भगवान, स्वयं ईश्वर भी शिव है। और वह अपने अंगों के रस और उसकी भावना, उसके चित्त के चिन्तन के चित्रण मनुष्य मानुषी देह में वास करने वाले जीवात्मा को यह संदेश है कि हे जीवात्मा “शिवो भव”। और शिव तू किसके लिए बन? वह हम सबके लिए शिव बना है। सारी प्रजाओं का पालन करने वाला वह प्रजापालक, हम सबके लिए शिव बना है। अपनी गोद में अपने गर्भ में अपने चरणों में उसने सबको स्थान दे रखा है। जिस विधाता के चरण यह पृथ्वी है उसके चरणों में हम सब सुरक्षित हैं। जिस विधाता का उदर ही यह अन्तरिक्ष है उसमें हम सब विराजमान हैं हमारी पृथ्वी को वह विधाता उसी में भ्रमण करा रहा है। और जिस विधाता का भाल यह द्युलोक प्रकाशवान लोक है और जिसकी आँखें सूर्य चन्द्रमा हैं जिसके कान यह सारी दिशाएँ हैं और जिसके प्राण यह वायु है उस विधाता की गोद में हम रह रहे हैं वही परम शिव है और उस परम शिव की जो नकल करता है उसका अनुसरण करता है उसके पदचिन्हों पर चलता है वह मनुष्य भी शिव कहलाता है। इसलिए कहा भगवान ने कि “शिवो भव प्रजाभ्यो” इन मानुषी प्रजाओं के लिए हे मनुष्य तू शिव बन। तू शिव कैसे बनेगा? “मा द्यावापृथिवी”। शिव महायोगी थे शिव महामानव थे शिव उस समय के ऋषि मुनियों के अन्दर निर्णायक महान ऋषि थे। महाराजा थे। वह विज्ञानों से और विभिन्न प्रकार की विभूतियों से ओत प्रोत थे। उनके पास में बहुत शक्तियाँ थी। तो उन शक्तियों का प्रयोग वह कहाँ करते थे? उन शक्तियों के कहाँ प्रयोग में सार्थकता थी? तो भगवान ने जो वेद मन्त्र में बताया गया। जब मेरे ध्यान में यह वेद मन्त्र आए तो मैंने फिर भगवान शिव के इस चित्र में जो प्रतीक छिपे हैं इनसे जोड़ने की कोशिश की। “मा द्यावापृथिवी” परमात्मा ने कहा है कि यह तो पृथ्वी है और यह जो द्युलोक है जो सारे जगत को प्रकाश बाँटता है प्रकाशित करता है जिसकी बदौलत हमारी आँखें संसार की वस्तुओं को देख पाती हैं। ये जो द्युलोक के प्रकाश वाले लोक हैं इनको हे मनुष्य नुकसान मत पहुँचा। इनकी हानि मत कर ऐसी जहरीली गैसें पैदा करके ओजोन की परतों को नुकसान मत पहुँचा। इस वायुमण्डल में इस हवा में ऐसी ताप मत पैदा कर जिससे मनुष्यों के शरीर झुलस जाएं। सूर्य के प्रकाश सूर्य की किरणों में जो ताप है वह ताप कुछ अलग है। और जो नाना प्रकार की वस्तुओं के निर्माण करने वाली जो यह फैक्ट्रियाँ हैं इनसे जो जहर निकलता है; इनसे जो गर्म धुआँ निकलता है। उससे वायुमण्डल में जो विष फैलता है उससे सारा मनुष्य समाज सारी मनुष्य प्रजाएं त्रस्त होती हैं पीडित होती हैं। और यह अस्पताल भरे हुए हैं यह उसी के परिणाम हैं। प्रकृति में सन्तुलन बिगड़ता है। ऋतुओं के अन्दर जो प्रकृति को दान प्राणी जीवन को देना चाहिए वह समय से नहीं कर पाती क्योंकि मनुष्य ने प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करके उसके सन्तुलन को डगमगा दिया। इसलिए समय से बरसात नहीं होती। समय से सारी ऋतुएं अपनी अपनी वस्तुओं का या अपना प्रभाव नहीं दिखाती। इसलिए “मा द्यावापृथिवी” पृथ्वी को हम नुकसान न पहुँचाएं पृथ्वी को बंजर न करें।

अब जो सारी इसाईयत है और जो सारी इस्लामिक कौम है यह पृथ्वी को कितना नुकसान पहुँचाते हैं। पृथ्वी पर जो भी मरता है उसे पृथ्वी में दफन कर देते हैं। दुनिया भर की जो नई नई चीजे चली हैं, प्लास्टिक चली है और कई चीजे चली हैं इन सबके कूड़ों को इकट्ठा कर हम पृथ्वी पर डाल देते हैं। जहाँ थैले से काम चलता है वहाँ हमने प्लास्टिक बना दी। कपड़े का थैला धीरे धीरे जरजर होकर वापस अपने कारण में जाकर मिट्टी हो जाता है। उससे किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचता। लेकिन प्लास्टिक वह पड़ी हुई सालों तक वैसी की वैसी ही रहती है; और वह जिसके भी पेट में जाती है जिस पशु के पेट में जाती है बस उसकी अंतर्द्वियों में सब

और चिपक जाती है उसको नुकसान पहुँचाती है। तो पृथ्वी को हम नुकसान न पहुँचाएं। वह व्यक्ति शिव है जो द्युलोक को नुकसान नहीं पहुँचाता वह व्यक्ति शिव है जो पृथ्वी लोक को नुकसान नहीं पहुँचाता वह व्यक्ति शिव है जो अन्तरिक्ष को नुकसान नहीं पहुँचाता। और “अभि शोचीर्मा” जो दूसरे प्राणिओं को नहीं सताता अपने स्वार्थ के लिए। वह व्यक्ति शिव है “मा वनस्पतीन्” जो वनस्पतिओं और ओषधिओं के साथ छेड़छाड़ नहीं करता। जो बीज विधाता ने बनाए हैं उन बीजों में और कोई छेड़छाड़ नहीं करता। जो उन बीजों से पौधे उत्पन्न होते हैं उनमें कुछ इन्जेक्शन लगाकर उनमें कोई जहर पैदा नहीं करता वह मनुष्य शिव है।

ठीक यही बात स्त्री के लिए भी कही है ईश्वर ने “शिवा भव पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा। शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय शिवा न इहैधि॥” परमात्मा ने कहा हे देवी! हे स्त्री! हे बुद्धि! तू सब पुरुषों सब गौवों सब घोड़ों तथा अन्य पशुओं सब प्राणियों किए लिए शिवा कल्याणकारिणी बन जा। यह सारे अपने कार्य क्षेत्र के लिए हैं, जो स्त्री का कार्यक्षेत्र है। परिवार स्त्री का कार्यक्षेत्र है; घर स्त्री का कार्यक्षेत्र है। घर घर तभी बनता है जब घर में स्त्री होती है। घर स्वर्ग तभी बनता है जब घर में स्त्री होती है सब चीजें अपनी अपनी जगह होती हैं। घर में साफ सफाई होती है। द्वार खुला होता है। आने जाने वाले अतिथी का आदर सत्कार होता है। रोज सुबह शाम पकवान व ताज़ा भोजन मिलता है। घर स्वर्ग बन जाता है स्त्री अगर वैसी हो तो। तो स्त्री को कहा तू कल्याणी बन। किनका कल्याण कर? पुरुषों का कल्याण कर। इसलिए कहा “पत्नी कर्त्व्या पत्न्या तारयति स्थापत्य” जो पति को तार देती है वह पत्नी। और जो अपने पति का पतन कर देती है वह स्त्री के व्यक्तित्व और उसके गुणों के विरुद्ध है। वह मानो स्त्रीत्व को त्याग करके पतित हो जाती है। इसलिए कहा स्त्री वही है जो धारिणी है जो कल्याणी है जो जाया है जो स्त्री और पुरुष को जन्म देती है। इसलिए कहा परमात्मा ने तू सब पुरुषों सारी गौवों के लिए और यातायात में सहायक जो अश्व घोड़े हैं उनके लिए और जो अन्य पशु हैं पक्षी हैं उनके लिए शिवा भव। तू कल्याणी बन जा। यह सारे अपने कार्यक्षेत्र जहाँ जहाँ तेरे कार्य हैं जहाँ जहाँ तेरी दूरदृष्टि है। जहाँ जो जो कार्यक्षेत्र तेरे अन्तर्गत आते हैं उन उन को तू सुगन्धित कर उन उन को तू अच्छा बना। तब जाकर स्त्री कल्याण कारिणी हो। तो स्त्री के कल्याणकारिणोओ होने में ये सारी चीजें हैं और हमारे लिए इस गृह में भी सदा कल्याणकारिणी बनकर निवास कर। “शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय शिवा न इहैधि” तो भगवान भी हमें शिव बनने के लिए कह रहा है। विधाता ने भी हमें शिव बनने के लिए कहा है।

अश्मन्वती रीयते स१रभध्वमुत्तिष्ठतु प्र तरता सखायः ।

अत्रा जहीमोऽशिवा येऽअसञ्छिवान्वयमुत्तरैमाभि वाजान् ॥१०॥ यजुः ३५:१०

भगवान ने कहा की हे मनुष्यों! “अश्मन्वती रीयते” यह जो सारा संसार है यह एक पत्थर वाली मानो एक नदी है और निरन्तर बह रही है। हे मनुष्यों तुम उठ जाओ खड़े हो जाओ और एक दूसरे का हाथ पकड़ लो। एक दूसरे का सहारा एक दुसरे के सहयोगी बन जाओ एक दूसरे के सहायक बन जाओ एक दूसरे के मित्र बन जाओ। और क्या करो? हाथ पकड़कर एक दूसरे का यह जो पत्थर वाली संसार रूपी नदी है इसको पार कर जाओ। संसार में पत्थर क्या है? राग है, द्वेष है, काम है, क्रोध है, लोभ है, छल है, कपट है, ईर्ष्या है, चोरी है, कालाबजारी है। तमाम प्रकार के दुर्गुण हैं, नीचताएं हैं, दुर्भावनाएं हैं, दुर्विचार हैं, शोषण है, अनाचार अत्याचार व्याभिचार भ्रष्टाचार है। इन सारी भावनाओं को, दुरिच्छाओं को, इस दुरातंक को अपने जीवन से विदा करो। और मित्र बनो सखा बनो। जब आप मित्र बनोगे तो किसी प्राणी के प्रति आपके मन में वैर भाव नहीं रहेगा। और जब वैर भाव मिट गया तो तुम एक दूसरे के दोस्त बन जाओगे, एक दूसरे का हाथ पकड़ लोगे और एक

दूसरे का हाथ पकड़ कर संसार रूपी नदी को तर जाओगे। और एक दूसरे के दुश्मन बने तो इस संसार के अन्दर राग के, काम के, क्रोध के, लोभ के, अहंकार के, द्वेष के, छल कपट के, लड़ाई झगड़ों के, अत्याचार के, रक्तपात के, ही पत्थर नुकीलें, दुःख देने वाले, घटनाएं, आपदाएं, समस्याएं, युद्ध, पारिवारिक युद्ध, वैमनस्य, परिवार के अन्दर, एक दूसरे के अन्दर, सम्बन्धों के अन्दर, इष्ट मित्रों में, समाज में रहने वाले, एक घर से दूसरे घर के अन्दर, सब ओर जहर फैल जाएगा। सब ओर त्रिशूल, सब ओर दुःख देने वाली समस्याएं पैदा हो जाएंगें। इसलिए कहा “अश्मन्वती रीयते” यह संसार रूपी जो नदी है जो दुःख देने वाले विचारों से, दुःख देने वाली घटनाओं से, दुःख देने वाले कष्टों से, दुःख देने वाली आपदाओं से भरी हुई है। हे मनुष्यों! हे प्राणियों! तुम सब एक दूसरे के मित्र बन जाओ। मित्र बन जाओगे तो समझ लेना यह मित्रता ही एक दूसरे का हाथ पकड़ना है। एक दूसरे के सहायक बन जाओगे और इस दुःख भरी नदी को तुम पार कर जाओगे। संसार रूपी भवसागर से पार हो जाओगे। उस परम कल्याण के परम आनन्द के महा स्रोत परमात्मा को पा लोगे। विधाता ने वेद में यह उपदेश हमें इन मन्त्रों में दिया कि “शिवो भव” शिव बनें हम। और आगे का “अत्रा जहीमो” अरे इसी संसार में यहीं छोड़ दो “अशिवा” जो भी अशिव है शिव नहीं है, कल्याणकारी भाव नहीं है, जो भले की भावना नहीं है, जो सहयोग की भावना नहीं है, जो मित्रता की भावना नहीं है, जो दूसरों को सुख देने वाली भावना नहीं है, जो एक दूसरे का हाथ पकड़कर आगे खींचने वाली भावना नहीं है, जो एक दूसरे के मददगार बनने वाली भावना नहीं है। जो दूसरे के शोषण की, दूसरे को लूटने की, दूसरे को कुएं में धकेलने की और दूसरे को तबाह कर देने की, जो दूसरे के जीवन को नष्ट कर देने की, जो दुरित भावना है वह अशिव भावना है। उन भावनाओं में कल्याण नहीं, उन भावनाओं के अन्दर तबाही है। उन भावनाओं के अन्दर त्राहि माम त्राहि माम का रुदन है। उन भावनाओं के अन्दर सब ओर नरसंहार और सब ओर धुआं ही धुआं, राख ही राख, और कष्ट है, दुःख है। इसलिए “अत्रा जहीमो” यहीं पर छोड़ दो “अशिवा” जितनी भी अशिव भावनाएं हैं, जो अकल्याणकारी भावनाएं हैं दुःख देने वाली जो भावनाएं हैं जितने भी दुर्विचार हैं। इसलिए प्रभु ने कहा “दुरितानि परासुव यद् भद्रं तन्न आ सुव” तो जितनी भी बुराईयां हैं उन्हें छोड़ दें हम और जो शिव हैं उनको जीवन में धारण कर लें उनको जीवन में हम अपना लें, उनको जीवन में हम समा लें, तदानुसार हम जीवन को जीएं। यह संदेश भगवान ने हमें वेद मन्त्रों में दिया। इन सारी बातों को आप दिमाग में बैठा लो तो आप को भगवान शिव का जो यह चित्र में चरित्र छिपा हुआ है। उनके चित्र में उनके जीवन की जो शैली रमी हुई है उसको फिर समझने में आसानी होगी। तो “अत्रा जहीमो” यहीं पर छोड़ दो “अशिवा” जो अशिव भावना है। और क्या करो “शिवान्वयमुत्तरैर्माभि वाजान्” हे वाजी! हे कल्याणकारी! हे पक्षियों की तरह सर्वत्र उड़ कर सबका भला करने वाले विद्वानों! हे बुद्धिमान मनुष्य! हे मानव! तू क्या कर! यह जो शिव भावनाएं हैं, कल्याणकारी कामनाएं हैं, कल्याणकारी जो भावनाएं हैं, कल्याणकारी जो इच्छाएं हैं, कल्याणकारी जो मन की वृत्तियाँ जो विचार हैं इनको तू जी, इनको तू बाँट इनको तू फैला, इनको धारण कर तदानुसार जीवन का निर्माण कर और जीवन को जी। यह भगवान ने कहा यह विश्वपति विधाता ने कहा। यह ब्रह्माण्ड निर्माता ब्रह्म ने हम सबको वेद पति वेदेश्वर परमेश्वर की वाणी इस कल्याणी की यह भावना है क् इ हम सब कल्याणकारी बने। पुरुष शिव बनें और जो स्त्रियाँ हैं वह शिवा बनें। पुरुष कल्याणकारी बनें और महिलाएं कल्याणकारिणी बनें। यह परमात्मा का वेद में उपदेश है। यह परमात्मा का वेद में संदेश है। यह भगवान का उपदेश हम सब प्राणियों के लिए है।

अब आइये हम भगवान शिव के, कैलाशपति महाराजा शिव के महान व्यक्तित्व पर विचार करें। सबसे पहले हम महाराजा शिव के इस महान सुगन्धित चरित्र को प्रदर्शित करने वाले चित्र के शीर्ष भाग पर जटाजूट के ऊपर गंगा के प्रतीक पर विचार करते हैं। शिव सिर पर गंगा अर्थात् औषधिय रोगनाशक जलों की धारा। गंगा किसे कहते हैं। हम त्रिलोक में सुनते हैं पतित पावनी। हम लोक में सुनते हैं गंगा का जल ऐसा है जो पवित्र है, जिसमें दुर्गन्ध नहीं आती, जो सड़ता नहीं है, जिसमें विकार पैदा नहीं होते। वह गंगा का जल है। यह आखिर गंगा आती कहाँ से है? तो देखिए, जो हिमालय हैं, जो कैलाश पर्वत है, और पूरी पृथ्वी पर असंख्य जो पर्वत हैं, अरावली पर्वत श्रृंखला है, और ऐसे असंख्य जो पर्वत हैं, इन पर्वतों पर जो असंख्य वृक्ष हैं औषधियाँ हैं, उन औषधिओं की जड़ों के अन्दर जो बादलों से आकाश से जो पानी बरसता है। और जो हिम प्रदेश हैं जो शीतल प्रदेश हैं वहाँ जो बर्फ जमती है और दूसरे प्रदेश हैं उष्ण प्रदेश हैं वहाँ पर जो अलग वृक्ष होते हैं अलग औषधियाँ होती हैं। कहते हैं कि जहाँ से यह गंगा बहती है उसके ऊपर जो वन है, उसके ऊपर जो पहाड़ है, उसके ऊपर जो घाटियाँ हैं, उसके ऊपर जो असंख्य अनन्त वृक्ष हैं, जिन्हे हम नहीं गिन सकते उन वृक्षों की जड़ों में जो पानी बहता है, उन वृक्षों की जड़ों में जो उष्णता है, जो औषधिय गुण हैं, वह उन वृक्षों की जड़ों से निकलते हुए पानी के अन्दर जो मिल जाते हैं। और ऐसा करके बून्दे बून्दे रिसकर उन वृक्षों की जड़ों से उनकी पत्तियों से, फूलों से झरझर कर, फलों से झरझर कर, और वहाँ का जो औषधिय वातावरण है उससे झरझर कर, बून्दे इकट्ठी हो हो कर आगे जाके जो झरना और नदी का रूप ले लेने वाली जो धारा है उस का नाम गंग धारा उस का नाम गंगा है। तो गंगा उस पानी का नाम है जो पानी औषधिय जल है, जिसमें रोगनाशक क्षमता है, जो रोगों का नाश करता है। और रोगों का नाश करके, रोगों का विनाश करके आदमी को स्वस्थ करता है, आदमी को जीवन देता है, आदमी के प्राणों की रक्षा करता है, प्राणों को हरण करने वाले रोगों का विनाश कर देता है। वह जो औषधिय गुण हैं, जल के अन्दर, गंगा के अन्दर, तो कह रहे हैं जैसे यह गंगा औषधिय जल वाली है, जैसे यह गंगा रोगों का नाश करने वाली है, जैसे यह गंगा रोगों से उत्पन्न दुःखों को दूर करने वाली है जैसे यह गंगा रोगों से उत्पन्न मृत्यु में प्रवेश कराने वाली उस दुःखदायिनी पीड़ा से उस प्राणी को इन औषधिओं के द्वारा स्वस्थ करती है, सुख प्रदान करती है। यह जो शिव है इस शिव की जटा जिसमें असंख्य केश जैसे हमारे सिर पर असंख्य बाल हैं, यह जो सारे बाल हैं यह मस्तिष्क में रहने वाले मन के विचारों के प्रतीक हैं यह मन की वृत्तिओं के प्रतीक हैं यह मन की भावनाओं के प्रतीक हैं, यह मन में चलने वाले विचार, भाव, वृत्तिओं के प्रतीक हैं। जैसे हम इस केशों को नहीं गिन सकते वैसे हम मन के विचारों को नहीं गिन सकते। जैसे ये केश अनन्त हैं हमारे मन के विचार हमारी वृत्तियाँ भी अनन्त हैं। उन सब वृत्तिओं को जानने के लिए विचारों को जानने के लिए उन सबको समझने के लिए एक दर्शन यहाँ प्रस्तुत किया गया है। तो भगवान शिव कौन हैं? कौन आदमी जीवन में शिव बनता है? जिस व्यक्ति के इन बालों के समान जो असंख्य विचार हैं वह सारे के सारे विचार गंगा की तरह पवित्र हैं, गंगा की तरह दूसरों के रोग अर्थात् दूसरों के अज्ञान को दूर करने वाले हैं। दो प्रकार के रोग होते हैं एक मानसिक रोग और दूसरा शारीरिक रोग। चरक महर्षि ने आयुर्वेद के अन्दर एक बहुत बड़ी बात कही। भगवान चरक कहते हैं कि रोगों की उत्पत्ति का मूल कारण क्या है? कहा प्रज्ञा अपराध। प्रज्ञा अपराध का मतलब क्या होता है? धी धृति और स्मृति का व्यवस्थित सन्तुलन बिगड़ जाना। यह धी धृति और स्मृति क्या है? धी कहते हैं बुद्धि को। जिस बुद्धि के सात गुण हैं। उन सात गुणों में पहला गुण है सुश्रुषा मतलब सुनना, लेकिन लोक में आजकल सुश्रुषा का मतलब सेवा हो गया। हमारे यहाँ पुराने समय से यही चला आ रहा है। किसी व्यक्ति को किसी शिष्य को गुरु तभी कुछ देता था जब

उससे सेवा करवाता था। सेवा करने से पता लग जाता था कि वह जो मांगने आया है वह उसके काबिल है भी या नहीं। तो परिक्षापूर्वक कह दिया जाता था पहले सेवा करो फिर मेवा पाओ। इस तरह सुश्रुषा शब्द से सेवा जुड़ गई। सुश्रुषा शब्द का वास्तविक अर्थ है सुनना। सुनने की इच्छा का होना ही सुश्रुषा है। उसके बाद में दूसरा बुद्धि का गुण है श्रवण करना। सुनने की इच्छा एक अलग चीज है और सुनना एक दूसरी चीज है। और तीसरा बुद्धि का गुण है ग्रहण करना। सुनने की इच्छा मात्र से व्यक्ति सुनता नहीं है। सुनने की इच्छा भी हो दूसरा गुण भी हो तो सुने भी सही। अब सुनने के बाद में तीसरा गुण भी होना चाहिए जिसका नाम है ग्रहण। व्यक्ति सुनने की इच्छा करे, श्रवण करे और जो सुना है उसको ग्रहण भी करे। और चौथा है जो ग्रहण किया है उसको ग्रहण करने के बाद धारण भी करे लम्बे समय तक। और पाँचवा गुण है जो धारण किया उस पर उहापोह करे, तर्क प्रतितर्क, प्रश्न प्रतिप्रश्न करे और उसको समझे। और उहापोह पाँचवे गुण के बाद छठा गुण है अर्थविज्ञान। सामने वाला क्या कह रहा है उसके तात्पर्य को समझे। उसके मतलब उसके अर्थ को समझे। न कि शब्द जाल में उलझा रह जाए। उसके अभिप्राय को समझे। इधर उधर की चेष्टा न करे। वह किस पीड़ा को किस दर्द को किस प्रेम को उड़ेल रहा है। वह क्या कहना चाहता है। उसकी आत्मा में क्या जिसको दिया जा रहा है उसके प्रति भावनाएं उसको आदर के साथ समझे स्वीकार करे ग्रहण करे। यह यहाँ पर कहा जा रहा है। और फिर बुद्धि का अन्तिम और सातवां गुण है तत्त्वज्ञान। तत्त्वज्ञान किनका संसार में तीन ही पदार्थ हैं आत्मा, परमात्मा और प्रकृति। इन्हीं को जाने इन्हीं को समझे इन्हीं का अनुभव करे। इन सात गुणों से विभूषित जब हमारी बुद्धि तो वह बुद्धि हमारे जीवन के अन्दर धैर्य पैदा करती है। हमारे जीवन में धृति को लाती है। तो प्रज्ञा अपराध में धी धृति धैर्य उसी मनुष्य के जीवन में आता है जिस मनुष्य के जीवन में बुद्धि अच्छी होती है, जू इसकी बुद्धि मेधा सुमेधा होती है। जिसके लिए भगवान से प्रार्थना गायत्री मन्त्र में की ऋषियों ने हमारे पूर्वजों ने और जो हम हवन यज्ञ के मन्त्रों में करते हैं। “याँ मेधां देवगुणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥” बोले हे परमेश्वर मेरे माता पिता और मेरे पूर्वज जो ऋषि मुनि थे। जिनका मैं वंशज हूँ। हे विश्व विधाता! आपने जैसे उनको मेधावान किया था. मेधा सम्पन्न किया था। उनको आपने जैसे सुमेधा प्रज्ञा से भर दिया था हे विधाता हमें भी भर दो। यह हमारे पूर्वज प्रार्थना परमात्मा से करते हैं। और गायत्री मन्त्र में भी कहा कि गायत्री मन्त्र के स्वरूप को समझ कर जब व्यक्ति परमात्मा का विचार करता है तब भगवान उसके हृदय उसकी आत्मा को प्रेरित करते हैं शिव बनने के लिए। कल्याणकारी बनने की दिशा में प्रेरित करते हैं। तो इसलिए कहा धी धृति, जब मनुष्य की धी बुद्धि अच्छी होती है तो उसकी धृति उसमें धैर्य आता है और जब मनुष्य में धैर्य बना रहता है तो फिर क्या होता है उसकी स्मृति स्थिर होती है। उसकी याददाशत सुगन्धित होती है। उसको चीजे याद रहती हैं। तो उसका वात, पित और कफ जिन तीनों के आधार पर यह सारा शरीर टिका हुआ है। वात, पित और कफ तीनों धातु सन्तुलित होती हैं। तीनों के अन्दर समर्थव होता है। तीनों व्यवस्थित होती हैं। तीनों के अन्दर सन्तुलन बना रहता है तो मनुष्य हर प्रकार से शारीरिक रूप से स्वस्थ रहता है और मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहता है। परन्तु जब बुद्धि आदमी की बिगड़ जाती है, जब बुद्धि आदमी की सुमती की जगह कुमती हो जाती है, तो मनुष्य का जीवन तबाह हो जाता है। बुद्धि बिगड़ी थी लंकापति राक्षसराज रावण की जो उस समय शास्त्रों का प्रकाण्ड पण्डित था। और जो महर्षि पुलस्त्य का पौत्र था। तो इस प्रकार से इतने शास्त्रों का ज्ञाता होते हुए भी जब बुद्धि भ्रष्ट हुई उसकी तो भगवान श्री रामचन्द्र जी की भार्या माता सीता को उठा लाया। और उस दुरात्मा की इस दुर्मति का फल यह हुआ कि समूल कुल सहित सारी लंका तबाह हो गई। सारे स्वजन मारे गए। सारे लंका वासी निर्दोष जनता

मारी गई। एक दुष्ट आदमी की दुर्मति ने सारी प्रजा का सर्वनाश कर दिया। और बुद्धि आदमी की जब भ्रष्ट होती है तो उसके शुभचिन्तकों की बातें उनके सुझाव भी उसके समझ में नहीं आते। यही हाल हुआ द्वापर में कंस का। उस दुष्ट ने अपनी ही बहन के इतने सारे पुत्रों और पुत्रियों को मार दिया और आखिर में श्री कृष्ण को भी मारना चाहता था। देवकी वसुदेव की सन्तान भगवान श्री कृष्ण को भी। लेकिन उसकी भ्रष्ट बुद्धि के कारण सारे समाज में त्राहि माम त्राहि माम फैला तो श्री कृष्ण ने उसका समूल नाश किया। यही दुर्मति यही बुद्धि जब भ्रष्ट दुर्योधन की हुई तो उसकी भ्रष्ट बुद्धि के कारण से उसकी सजा आज भी हम भारत की सन्तानें भुगत रहे हैं। बुद्धि भ्रष्ट धनानन्द की हुई तो सारा उसका साम्राज्य तबाह कर दिया कौटिल्य महामति चाणक्य ने। विष्णुगुप्त चणक पुत्र चाणक्य ने। तो जहाँ जहाँ भी बुद्धि खराब होती है उस व्यक्ति का जीवन तबाह हो जाता है। वह अपना और अपनों का नाश कर देता है। प्रतिष्ठा तो जाती ही है उस व्यक्ति की शान्ति भी चली जाती है। इसलिए क्या कहा? यदि बुद्धि खराब हुई तो फिर क्या होगा? तो कहा बुद्धि बिगड़ी, व्यक्ति की धी बिगड़ गई तो धृति धैर्य चला जाएगा। आदमी अधीर हो जाएगा और अधीरता में उसकी स्मृति चली जाएगी याददाशत उसकी व्यवस्थित नहीं रहेगी। शास्त्रों का ज्ञान गुरुओं का उपदेश सारा का सारा तबाह हो जाएगा और आदमी फिर कहीं का नहीं रहेगा। वह पथ से भटक जाएगा और आदमी के अन्दर यह मानसिक तूफान चचलता है। जब उसकी बुद्धि विपरीत होती है, बुद्धि बिगड़ती है, बुद्धि खराब होती है, बुद्धि भ्रष्ट होती है तो उस व्यक्ति का धैर्य समाप्त हो जाता है। वह अधीर हो जाता है। उसकी याददाशत उसका विवेक खत्म हो जाता है। तब उसके शरीर में रक्त का उबाल, रक्त में नाना प्रकार के विषाणु विषाक्त दोष और विकार पैदा होते हैं और उसके कारण उसके शरीर के जो तीनों आधार तत्त्व वात पित्त और कफ तीनों कुपित हो जाते हैं, तीनों बिगड़ जाते हैं और उनके बिगड़ने के कारण से उस मनुष्य का जीवन तबाह हो जाता है। मानसिक रूप से तो विकारों का घर बनता ही है शारीरिक रूप से भी वह विकारों का घर बन जाता है। तो इसलिए कहा कि शिव वह व्यक्ति हैं जो अनन्त सिर के बालों के समान जो सिर के विचार हैं उन विचारों को वह औषधिय गंगा के समान, कल्याणकारी गंगा के समान, रोगों से जैसे दुःख मिलते हैं उन दुःखों को दूर गंगा का जल कर देता है, वैसे ही उस व्यक्ति के मन में उस व्यक्ति के भीतर मस्तिष्क में जो विचार चलते हैं वह सारे असंख्य केशों के समान जो अनगिनत विचार हैं भावनाएं हैं जो वृत्तियाँ हैं वह सारी गंगा के समान पवित्र हो। वह दूसरों के दुःखों को दूर करने की दिशा निरन्तर चलायमान गतिशील निरन्तर भावनाशील उसकी वृत्तियों में वह भावनाएं वह धाराएं वह प्राणिओं के प्रति प्रेम वह करुणा और सबके कल्याण की भावनाएं बहती रहें। शिव वह व्यक्ति है जिसके मन में गंगा के समान विचार दूसरों के दुःखों को दूर करने वाले, दूसरों को सुख और दूसरों का कल्याण करने वाले, दूसरों का भला और सदैव भला सोचने वाले विचार निरन्तर जिसके मस्तिष्क में चलते रहते हैं वह व्यक्ति शिव है। और फिर आगे कहा वह व्यक्ति शिव है और उस व्यक्ति का दिमाग उसका ललाट उसका मस्तिष्क जो इस शरीर का प्रमुख हैड आफिस है जो कन्ट्रोल रूम है जिससे सारे शरीर की मांसपेशियाँ, सारे शरीर के तन्त्रिका तन्त्र सब कुछ संचालित होता है, उस हैड आफिस के अन्दर कैसी शान्ति विराजमान रहती है क्योंकि जहाँ शान्ति होती है वहीं पर विकास होता है। जहाँ शान्ति होती है उन्हीं के मन में सद्भाव और कल्याण की भावनाएं प्रफुल्लित निरन्तर ताजा सुगन्धित सुरभि की तरह बहती रहती हैं। उस व्यक्ति के उस मन की उसके मस्तिष्क की उसके आन्तरिक चिन्तन और मस्तिष्क की स्थिति को बताने के लिए वहाँ चन्द्रमा का प्रतीक लगाया गया कि इस आदमी का दिमाग चन्द्रमा की तरह शीतल रहता है। अरे जो इतना अच्छा सोचने वाला होगा उसका दिमाग तो चन्द्रमा की तरह शीतल ही होगा। वह बुरा नहीं सोचेगा। वह

अहित का नहीं सोचेगा। वह महर्षि, सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण चाहने वाला, वह देवता गुरुवर महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज, कितनी बार उनको जहर दिया गया, लेकिन कभी जहर देने वाले, कभी उनका अनिष्ट करने वाले, कभी ईंट पत्थर फेंकने वाले, कभी उनको गालियाँ देने वाले, कभी उनके ऊपर दोषारोपण करने वाले, किसी मनुष्य का उस महान आत्मा ने बुरा नहीं चाहा। इस जीवन में सदैव सबका हित सबका कल्याण चाहते रहे। किसी बुरा चाहने वाले व्यक्ति को जब वहाँ के प्रशासन ने पकड़ लिया तब जंजीरों में कैद करके सामने लाकर पूछा महाराज हमने इस दुष्ट को पकड़ लिया जिसने आपको मारने की कोशिश की। इसको हमने बेड़ियों में कैद कर दिया है इसको सजा दिलाएंगे, जेल में बन्द करेंगे। उस करुणा अवतार पावन महर्षि की भावना से उसके हृदय से जो शब्द निकले थे वह अत्यन्त अनुकरणीय हैं। वह पूरी आर्य जाति के लिए गौरव का विषय है, अनुसरणीय है। उस महान आत्मा ने कहा मैं इस धरती के इस मनुष्य जाति के मानवों को बेड़ियों में कैद करवाने के लिए नहीं आया हूँ मैं तो इन सबको अज्ञान की बेड़ियों से कारावास से मुक्त कराने के लिए आया हूँ। इनको खोल दो इनको छोड़ दो। इसे कहते हैं शिव बन जाना। जिस सेवक ने जिस पातक ने जिस जगन्नाथ ने मीठे दूध में विष मिलाकर सखिया मिलाकर पिला दिया और बाद में पता लगा तो उसको भी अपने पास रखे हुए पैसे हाथ में देते हुए कहा "जगन्नाथ! तूने अच्छा नहीं किया। मेरे हाथ से चारों वेदों का भाष्य होता तो इस धरती पर ज्ञान का इतना प्रकाश फैलता कि उसे ढाँपने वाला कोई नहीं होता। यह सारी धरती स्वर्ग बन जाती। जगन्नाथ! तूने अच्छा नहीं किया। जा यह पैसे लेजा और अपनी जान बचा नहीं तो मेरे भक्त तुझे जीवित नहीं छोड़ेंगे। इसे कहते हैं शिव बन जाना। तो महानुभाव शिव वह व्यक्ति है जिसके दिमाग में सदैव कल्याण की भावनाओं की धाराएं बहती रही हैं। जिसके जीवन में सदैव कल्याण की अनन्त धाराएं बह रही हैं। जो किसी का भी बुरा नहीं चाहता उसका नाम शिव है। वह ऋषि है; वह महामानव है; वह प्रेरणा स्रोत है। इसलिए ऐसी महान आत्माओं को भगवान शब्द से सम्बोधित किया जाता है। हमारी परम्पराओं में गुरुओं को भी भगवन् कहा जाता है। तो इस प्रकार भगवान शिव के आन्तरिक जीवन शैली को उनके आन्तरिक व्यक्तित्व को हम जो बाहर उनकी चित्राकृति में चित्रित किया गया है उसको समझते जा रहे हैं।

अश्मन्वती रीयते स॑र॒भध्व॑मुत्तिष्ठत॑ प्र तर॑ता सखायः ।

अत्रा॑ जहीमोऽशि॑वा येऽअस॑ञ्छिवान्वयमुत्तरे॑मा॒भि वाजा॑न् ॥

यजुः ३५:१०

शि॒वो भ॑व प्र॒जाभ्यो॑ मानु॑षीभ्यस्त्वम॑ङ्गिरः ।

मा द्यावा॑पृथि॒वीऽअ॒भि शो॑ची॒र्मान्तरि॑क्षं मा वन॒स्पती॑न् ॥

यजुः ११:४५

शि॒वा भ॑व॒ पुरु॑षेभ्यो॒ गोभ्यो॑ अश्वे॑भ्यः शिवा ।

शि॒वास्मै॑ सर्व॑स्मै क्षेत्रा॑य शि॒वा न॑ इ॒हैधि॑ ॥

अथर्व ३:२८:३

शि॒वेन॑ मा॒ चक्षु॑षा पश्यतापः शि॒वया॑ त॒न्वोप॑ स्पृशत॒ त्वचं॑ मे ॥

अथर्व १६:१:१२

शि॒वान॒ग्निन॑प्सुषदो॑ हवामहे॒ मयि॑ क्ष॒त्रं वर्च॑ आ ध॒त्त दे॒वीः ॥

अथर्व १६:१:१३

सत्संग में, सभा में, बैठक में मैं आप सभी का सादर हार्दिक स्वागत है। विगत दिवस की भांति आज भी हम भगवान शिव महाराजा शिव के व्यक्तित्व से सम्बन्धित चर्चा करने जा रहे हैं। उनके चित्र के अन्दर जो प्रतीक है उन प्रतीकों से जो शिव बनने की शिक्षा दी जा रही है क्योंकि भगवान शिव, महाराजा शिव त्रेता युग के महापुरुष थे। त्रेता युग में उनका सम्बन्ध जिन ऋषियों से, मुनियों से, महापुरुषों से हुआ उन्होंने और उनके बाद वालों ने परम्पराओं से जो स्मरण चले आये उन स्मरणों को आधार बनाकर उनके सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है। महाभारत में महाराजा शिव के बारे में बहुत कुछ लिखा मिलता है। वाल्मीकि रामायण में भी क्यों वाल्मीकि रामायण का शुद्ध स्वरूप हमारे पास नहीं है तो वह कहां तक ठीक है कहां तक गलत है लेकिन जैसे मिलता है कि जब समुद्र पार करने की तैयारी कर रहे थे उस समय श्री रामचन्द्र जी ने महाराजा शिव का स्मरण किया और जो श्रृंग ऋषि की आत्मा के नाम से जो ब्रह्मचारी, कृष्ण दत्त ब्रह्मचारी जी प्रसिद्ध हैं। क्योंकि उनकी जो बातें हैं उनके जो विचार हैं वह इस प्रकार के हैं जो उस लोक को प्रकट करते हैं। क्योंकि एक अशिक्षित व्यक्ति जो बचपन में गाय, भैंस, बकरियां चराता हो। एक अवस्था विशेष में जाकर वह वेदों के मन्त्र बोलें, श्लोक बोलें और ऐसी दिव्य वार्ता करें जिसको सुनकर सुनने वाला सुनता रह जाये तो उसपर सहज ही विश्वास होता है। तो उन्होंने भी महाराजा कैलाशपति शिव के बारे में बहुत कुछ बोला और लिखा भी और मैंने अभी और कल आपके सन्मुख कुछ वेदों के मन्त्रों का उच्चारण किया है। ये वेद मन्त्र शिव बनने की प्रेरणा दे रहे हैं। उनका भाव मैं कल आपको निवेदन कर चुका हूँ।

अश्मन्वती रीयते स॑र्भध्व॒मुत्तिष्ठ॑तु प्र तर॑ता सखायः ।

आदि। इस मन्त्र के अन्दर मनुष्य को शिव बनने की शिक्षा दी और मनुष्य को अशिवा जो अकल्याणकारी जो विचार है जो भावनाएं हैं, जो उसके मन में चलने वाला जो चिन्तन है जो सोच विचार है उन सबको और जो अशिवा नुकसान करने वाली खाने-पीने की चीजें नुकसान करने वाला संसार है या जो भी कुछ है उस मनोवृत्ति को उस वस्तु को छोड़ देने की वहां अत्राजहिमो छोड़ देने की बात कही और शिवा जो कल्याणकारी विचार है, वस्तुएं हैं, व्यक्ति हैं उनको अपनाने की बात वहां पर कही। सब लोगों को एक दूसरे से मित्रता करने की, एक-दूसरे का सखा बनने की प्रेरणा दी। इसी चीज को शिव कहा गया है। आगे दो मन्त्र पढ़े थे

शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः ।

आदि। वहां पर पृथ्वी को नुकसान न पहुंचाने की, द्युलोक को नुकसान न पहुंचाने की, किसी मनुष्य को नुकसान न पहुंचाने की, अन्तरिक्ष को नुकसान न पहुंचाने की और वनस्पति को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचाने की प्रेरणा दी। इनको जो नुकसान नहीं पहुंचाता, इनकी जो रक्षा करता है, सुरक्षा करता है या इन सबके अच्छे बने रहने में जो मदद करता है वो इन्सान वो मनुष्य शिव होता है, वो शिव बनता है। जैसे यज्ञ करने से सब भूतों को लाभ होता है सारा वायुमण्डल और सारी प्रकृति, सारे संसार के समस्त प्राणियों को लाभ पहुंचता है तो यज्ञ करने वाला व्यक्ति शिव है। क्योंकि वो सबके कल्याण का पुरुषार्थ, परिश्रम, प्रयत्न करता है जो सबके हित में भावनाएं रखता है वो व्यक्ति शिव है।

दूसरा हमने मन्त्र पढ़ा था तो उसके अन्दर स्त्री को भी शिवा होने का उपदेश दिया है कि स्त्री भी शिवा बने, वो भी कल्याणी बने कल्याणकारी बने। उसका जिन पुरुषों से पिता, पति, पुत्रों से भाइयों से रिश्तेदारों से जो पारिवारिक सम्बन्ध है उन सम्बन्धों में वो उनका कल्याण करे, उनके लिए कल्याणी बने, बच्चों का उत्तम निर्वाहन करने, पति की सेवा सुश्रुषा करे, पत्नी का धर्म निभाये, माता-पिता के लिए कल्याणकारिणी हो उनके यश और उनके कुल की आन को रखे। उनके लिए कल्याणी हो अपने ससुराल और पिहर के लिए कल्याणी हो। अपने घर में जो पशु हैं जो गाय है, जो दूध देने वाली हैं जिनसे सबकी बुद्धि स्वस्थ होती है और शरीर बलिष्ठ होता है तो गायों के लिए कल्याणी हो, अश्वों के लिए, वहन करने वाले पशुओं के लिए कल्याणी हो और सबके लिए कल्याणी हो अपने घर के लिए कल्याणी हो तो ऐसा उपदेश भगवान का कल हमने अथर्ववेद का समझा। दूसरा मन्त्र यजुर्वेद का था यजुर्वेद में भी हमने समझा। और इसी प्रकार से अभी मैंने अथर्ववेद के दो मन्त्र ओर भी पढ़े हैं जिनमें भी यही बात कही है कि हम शिव बनें। हमारे अन्दर भावनायें शिवत्व की पैदा हो यानि कल्याणी भावनाएं पैदा हों। मैंने अभी बोला कि

शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे ॥ अथर्व १६:१:१२

भगवान कह रहे हैं एक ऋषि कह रहा है साधना में तपस्या में भगवान की भावना में लीन जगत के, संसार के जो श्रेष्ठ मनुष्य हैं जो आजू-बाजू विद्वान पुरुष हैं उनसे प्रार्थना कर रहा है क्या कह रहे हैं शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः — माँ मुझे शिवेन चक्षुषा बोले मुझे कल्याणी

चक्षुओं से कल्याणकारी दृष्टियों से देखो, **शिवयां तन्वोप'** और कल्याणकारी शरीर में मेरी त्वचा को स्पर्श करो कल्याण की भावना से मेरी चमड़ी को छूओ, माता—पिता आशीर्वाद देते हैं जब हम उनके चरण छूते हैं तो वो माथा सूंघते हैं। बच्चे को माता—पिता, दादा—दादी अच्छी कहानियां सुनाते हैं, गोद में खिलाते हैं लाड़—चाव करते हैं कहा कल्याणी भावना से मुझे आशीर्वाद दो, मेरे माथे पर हाथ रखो मेरी चमड़ी का स्पर्श करो, मेरा माथा सूंघो, मुझे उपदेश करो कल्याणी भावना से।

तो इस प्रकार यहां पर शिव शब्द का अर्थ कल्याण है कल्याण की भावना है। फिर दूसरा मन्त्र पढ़ा था उसके अन्दर भी ऐसा ही अद्भुत अर्थ है कि —

शिवानग्निंप्सुषदो'हवामहे मयि'क्षत्रं वर्च आ धत्त देवीः ॥

अथर्व १६:१:१३

हम लोग कल्याणकारी आप्त प्रजाओं के ऊपर शासक रूप में विराजमान कल्याणकारी अग्नि के समान प्रकाशमान अग्रणी नेताओं को आदर—सत्कार से बुलाते हैं दिव्य गुण वाले प्रजागणों आप लोग क्षत्र धर्म युक्त बल और तेज आधत धारण करो। सारी बातें कल्याण के आसपास घूमती हैं। जिन भावों से, जिन भावनाओं से, जिन विचारों से, व्यक्ति का अपना कल्याण होता हो, समाज का कल्याण करता हो, राष्ट्र का कल्याण करता हो, सबके के कल्याण के बारे में सोचता हो वो व्यक्ति शिव है। वो व्यक्ति शिव बनने की ओर अग्रसर होता है। भगवान शिव का आन्तरिक, आध्यात्मिक जीवन ठीक इस चित्र की भांति है और इस चित्र की भांति हम भी बना सकते हैं। शिव नाम परमात्मा का है, शिव नाम राजा का है, शिव नाम हर उस व्यक्ति और वस्तु का है जो प्राणियों का कल्याण करती है, करना चाहती है या जीवन जीव मात्र के लिए कल्याणकारी होती है। अतः शिव कोई भी बन सकता है और बनना चाहिए ऐसा ही वेद में परमेश्वर का उपदेश और आदेश भी है जो अभी मैंने पांच मन्त्रों में कल और आज आपके सन्मुख रखा है।

तो ये जो प्रतिमा है ये एक प्रतीक है जिसकी पूजा का तात्पर्य मावा, मिष्ठान चढ़ाना, जिसकी पूजा का तात्पर्य जल चढ़ाना इसकी पूजा का तात्पर्य ये सब नहीं है। इसकी पूजा है शिव बन जाना, स्वयं को शिवा बना देना, स्वयं के भीतर भी, स्वयं के मस्तिष्क में भी, स्वयं के मन में भी, स्वयं के दिमाग में भी गंगा की तरह पवित्र और जटाओं के समान असंख्य विचार

निरन्तर विचरण करने वाले होने चाहिए। शिव वो व्यक्ति है जिसके मन के विचार, जिसके मन की भावनाएं, जिसके मन के थोर, जिसके मन की कल्पनाएं सदैव गंगा के समान औषधीय गुण वाली है, जैसे औषधी रोगी के रोग को दूर करके उसे सुख, शान्ति और जीवन प्रदान करती हैं उस प्रकार से ही जो व्यक्ति शिव होता है जिसके मन के अन्दर शारीरिक और मानसिक रोगों को दूर करने के विचार निरन्तर पल्लवित और विकसित हो रहे होते हैं वो व्यक्ति शिव होता है उसी व्यक्ति के अन्दर ऐसी भावनाएं निरन्तर चलती रहती है। कल हम विचार कर रहे थे कि महाराजा शिव के आन्तरिक, आध्यात्मिक जीवन पर, जिस जीवन को शिव को शिव चित्र के अन्दर, शिव चित्र के बाहर इन प्रतीकों में दिखाया जा रहा है उस भगवान शिव के आध्यात्मिक चरित्र को इन चित्रों की चित्र में जो प्रतीक हैं उनके माध्यम से हम समझ रहे थे। हमने समझा था कि शिव वो व्यक्ति है जिसके मन के विचारों में गंगा की भांति पवित्र, औषधीय, रोग नाशक, संताप नाशक, व्यथा नाशक, भय नाशक, दुःख नाशक, सुखदायी, कल्याणकारी, प्रेम, स्नेह, आर्द्रता, आरजव से कल्याण की भावनाओं से भरे हुए विचार निरन्तर चलते रहते हैं कितने विचार जैसे सिर के असंख्य बाल हैं इतने विचार जिनको गिना नहीं जा सकता है ऐसे अनन्त विचार केवल और केवल सबके कल्याण के भावों से भरे हुए निरन्तर उसके मन विचरते रहते हैं वो आदमी शिव है उस व्यक्ति का ललाट, उस व्यक्ति का दिमाग, उस व्यक्ति का मस्तिष्क कैसा रहता है कहा चन्द्रमा। चन्द्रमा का प्रतीक दिखाकर कहा कि चन्द्रमा की भांति वो शीतल रहता है। चन्द्रमा की भांति उस व्यक्ति का दिमाग, उस व्यक्ति का मस्तिष्क, उस व्यक्ति का मन, उस व्यक्ति का अन्तःकरण, उस व्यक्ति का हृदय। हृदय एक छाती में है दूसरा मस्तिष्क में है। हमारी जो ज्ञानेन्द्रियां हैं, कर्मेन्द्रियां हैं, हमारा जो अन्तःकरण है, मन है, बुद्धि है उनका जो निवास स्थान है वो मस्तिष्क है। तो मस्तिष्क के अन्दर ये जितना भी परिवार है ये सब शान्त चन्द्रमा की भांति रहता है और चन्द्रमा क्या करता है हमारी वनस्पति और औषधी जगत को जीवन देता है रस पूरता है इनमें उसी रस से प्राणियों के प्राणों की रक्षा होती है, प्राणियों के जीवन चक्र को गति मिलती है। तो शिव वो व्यक्ति है जो प्राणिमात्र के जीवन चक्र को गति देने में तत्पर है। शिव वह व्यक्ति है जो सारी सृष्टि के कल्याण के बारे में, जीव मात्र के भले के बारे में सोचता है, सदैव शान्त रहता है, प्रसन्न रहता है, आनन्दित रहता है, ध्यान मग्न रहता है और अपनी भावनाओं से और अपने कृत्यों से संसार के उपचार के प्रति विचारता रहता है, वो व्यक्ति

शिव है। उसी चीज को आगे बढ़कर दिखाया तृतीय नेत्र ज्ञानान्मक दृष्टिकोण का जो प्रतीक है भगवान शिव का जो तीसरी आंख है, तीसरा नेत्र है जो तिलक स्थान पर विराज्य चक्र पर है ये जो तीसरा नेत्र ज्ञान का प्रतीक है। जब-जब भी मनुष्य के भीतर सांसारिक भावनायें, जो मर्यादा के विरुद्ध हैं वो उत्पन्न हो तब वो उन दुरित भावनाओं का नाश ज्ञानात्मक दृष्टिकोण से कर देता है। भगवान कृष्ण के मुंह से भगवान वेदव्यास ने महाभारत में उपदेश दिया कि हे अर्जुन! ज्ञान के समान इंसान को पवित्र करने वाली संसार में कोई अग्नि नहीं। ज्ञान सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम वो अग्नि है जिसके अन्दर अज्ञान की राशि जलकर भस्म हो जाती है। ज्ञान के एक दीपक से घर का सारा अंधेरा नष्ट हो जाता है, ज्ञान के एक सूर्य से सम्पूर्ण भूमण्डल का अन्धकार नष्ट हो जाता है। जब ज्ञान का प्रकाश मिलता है तब जीवन के अन्दर आत्मा को परमात्मा का द्वार दिखाई देता है। चाहे प्रकाश ज्ञान का हो, चाहे प्रकाश सूर्य का हो, जैसे सूर्य के प्रकाश के बिना आदमी अन्धेरे में चला जाता है, ठोकरें खाता है, गिरता है, कुआ-बावड़ी में गिर जाता है, चोटें खाता है पत्थरों की और दुःखों को पाता है ठीक उसी प्रकार से अज्ञान के कारण ज्ञान के प्रकाश में अभाव में, ज्ञान के प्रकाश के अभाव में भी इन्सान अज्ञान के कारण नाना ठोकरें खाता है, काम की ठोकर, क्रोध की ठोकर, लोभ की ठोकर, मोह की ठोकर, ईर्ष्या की ठोकर, द्वेष की ठोकर, लालच की ठोकर, नाना दुरितों के द्वारा ढंसा जाता है, नाना दुरितों की ठोकरें खाकर त्राहिमाम-त्राहिमाम करता है, कभी आंसू बहाता है, कभी दीन-हीन होकर दूसरों के सन्मुख गिड़गिड़ता है। नाना दारुण अवस्थाओं को दारुण दुःखों को प्राप्त होता है इसलिए शिव वो व्यक्ति है जिसके पास में निरन्तर जगत के भले, जगत के कल्याण के बारे में सोचने से जो ज्ञानाग्नि भीतर ज्ञान का दीपक प्रज्ज्वलित हो गया है जो उनका ज्ञानात्मक दृष्टिकोण है उस ज्ञानात्मक दृष्टिकोण कभी यदि भूलचूक कोई ऐसा आलम्बन संसार में सामने आ जाये तो जो भीतर काम को पैदा, वासना को पैदा, क्रोध को पैदा, लोभ को पैदा, द्वेष को पैदा, अहंकार को पैदा, अभिमान को पैदा करते हैं तो वो जो ज्ञानात्मक दृष्टिकोण हैं जो निरन्तर साधना से, जगत के कल्याण की भावना का चिन्तन करने से प्राप्त हुआ है वो उसको दग्ध कर देता है, वो उसको भस्म कर देता है, वो उसको स्वाह कर देता है। इसलिए यहां एक प्रतीक रचाकर कामदेव को शिव ने, जब कामदेव ने काम बाण शिव के ऊपर चलाया तो शिव को क्रोध आया और उसने काम को नष्ट कर दिया ये क्रोध ज्ञानात्मक है जब अज्ञान प्रहार

ज्ञान पर करता है तो ज्ञान की जलती हुई ज्वाला से अज्ञान भस्म हो जाता है जैसे एक दीपक की दीपशिखा से कमरे का सारा अन्धकार नष्ट हो जाता है। ये तीसरा नेत्र ज्ञान का प्रतीक है। न कोई ऐसी जैसी बाकी आंखें हैं ऐसी कोई उनके कोई तीसरी आंख हो। क्योंकि सृष्टि क्रम के विरुद्ध ऐसे महापुरुष का चिन्तन हो नहीं सकता।

इसके बाद में आगे बढ़े, आगे देखें गले में जब ध्यान जाता है भगवान शिव के तो हम क्या देखते हैं कि गले के अन्दर शेषनाग फण फहलाये लिपटा हुआ है शान्त बैठा है। दूसरा एक कथानक है जब समुद्र मन्थन हुआ तो उस समय उस मन्थन के अन्दर विष भी निकला। वह समुद्र मन्थन कुछ नहीं संसार का ही मन्थन है। संसार का ही मनन जब करोगे तो इसके अन्दर आपको जहां लक्ष्मी मिलेगी, जहां शान्ति मिलेगी, जहां अमृत मिलेगा इसके अन्दर सब मिलेगा तो सबके साथ में विष भी मिलेगा, सबके साथ में जहर भी मिलेगा, सबके साथ में दुःख भी मिलेगा, सबके साथ में अराजक तत्व भी मिलेंगे, सबके साथ में नकारात्मकता, सबके साथ में कुछ ऐसा भी मिलेगा जो जहर के समान हो, जो जहर के समान दुःखदायी हो। तो जो जहर के समान दुःखदायी हैं, जो जहर के समान कष्टदायी हैं उसको वही पचा सकता है जो शिव हो। जो सारे जगत के कल्याण के बारे में सोचता हो वो इस प्रकार की समस्याओं का समाधान, इस प्रकार के दुःखों का समाधान कर सकता है इन सब प्रकार की समस्याओं की निवृत्ति कर सकता है, इन प्रकार की समस्याओं को दूर कर सकता है, इन प्रकार की समस्याओं को समाप्त कर सकता है जिसका चिन्तन जगत के कल्याण के बारे में निरन्तर चलता रहता हो। वो समस्याओं के समाधान के बारे में सोचेगा, वो जगती के भले के बारे में सोचेगा जैसे आप जीव मात्र के भले के बारे में सोचते हो, अग्निहोत्र करते हो या जीव श्रेष्ठतम कर्म करते हो। हमारे ऋषि तो महापुरुष थे वो तो प्रकृति के कण-कण के भले के बारे में सोचते थे, वो तो जीव मात्र के कल्याण के बारे में सोचा करते थे। तो शिव वो व्यक्ति है जो सब ओर से विष पी जाता है और अपने भीतर रख लेता है किसी को कुछ नहीं कहता बांटने की बारी आये तो प्रेम बांटता है, शान्ति बांटता है, सुख बांटता है, खुशियां बांटता है, लोगों को जोड़ता है, लोगों को धर्म और सच्चाई और नेकी की राह पर चलने की प्रेरणा देता है निरन्तर सबके सृजन की बात करता है। जहां पर भी जहर मिलता हो, जहां पर भी इस प्रकार के अराजक तत्व हों जिनमें काम, जिनमें क्रोध, जिनमें लोभ, जिनमें छल, जिनमें कपट, जिनमें ईर्ष्या, जिनमें द्वेष पल रहा हो उसको

वो आदमी पी जाता है मानो आपने मुझे गालियां दी और यदि मैं शिव बनने के मार्ग पर चल रहा हूँ तो मैं आपकी गालियों का उत्तर गालियों से नहीं दूंगा उसे पी जाऊँगा और उसे गले से बाहर नहीं निकलने दूंगा गले के भीतर ही रखूंगा इसलिए शिव वो हैं जो विष को पी जाता है और अमृत उगलता है। शिव वो हैं जो दूसरों की गलतियों को भुगत लेता है और दूसरों को गलतियों के बदले सुख देता है, दूसरों के दिये दुःखों और घावों के बदले भी उन्हें अमृत और मधु चटाता है उनको सुख देता है वो आदमी शिव है।

तो यहां जो शेषनाग और विष का प्रतीक लिया गया है कि वो तो हलाहल को पीने वाला है तो हलाहल को पीने वाला वही समदर्शी, वही धैर्यशाली वही सहनशील इन्सान है भगवान के बारे में वेद में कहा **सहो असी सहो मयी धेहि**। हे प्रभु आप तो सहन करने वाले हो इस धरती पर ऐसे भी नास्तिक हैं जो आपके निरन्तर जन्म से लेकर हो रहे उपकारों को भी नजरअन्दाज करते हैं, आपको नहीं मानते हैं जो निरन्तर आपके उपकारों को पाकर आपसे वायु, आपसे जीवन, आपसे जल, आपसे अग्नि, आपसे पृथ्वी और नाना प्रकार के फल-फूल, ये शरीर और इस शरीर में सारी व्यवस्थायें, सारी सुविधायें और सारी शक्तियां पाकर भी ऐसे नराधम, नीच पुरुष मनुष्य ऐसे भी हैं जो इतने कृपण हैं कि अनन्त उपकारों को पाकर भी उपद्रित नहीं होते। लेकिन भगवान **सहो असी सहो मयी धेहि** हम कहते हैं वो तो सब कुछ सहन करने वाला है। हे प्रभु! हमको भी अपने जैसा सहन करने वाला बना दो। तो शिव वो हैं जो सहन करता है तो समाधान देता है समस्याओं का न की समस्याओं पर समस्याएं खड़ी करता है। परिवार में पिता शिव होता है जब वो बच्चों की गलतियों को सहन करके उन्हें सच्चाई, अच्छाई और नेकी का मार्ग बतलाता है। राष्ट्र में राजा शिव होता है जो सारे समाज, सारे राष्ट्र को अपना परिवार समझकर उनके लिए जीता है, रात-दिन पूरे अपने राष्ट्र के बारे में सोचता है, भावुक हो जाता है, आंखों से आंसू बह उठते हैं उसका प्रेम उसके हृदय से निकलकर आंखों से बहने लगता है। वो राष्ट्र का राजा भी शिव है, परिवार का वो पिता भी शिव है जो परिवार का पालन-पोषण करता है और फिर भी उसको उपकारों न मानकर जब बच्चे विद्रोह कर देते हैं अज्ञान के कारण उसे सहन करता है वो भी शिव है। संस्थाओं के अन्दर जो समस्याएं कुछ लोग स्वार्थों के कारण पैदा कर देते हैं उनको भी सहन करके संस्था को लोक कल्याण की राह पर लेकर चलता है वह संस्था का प्रतिनिधि भी शिव है। वो हमारा मन शिव है जो सबके

कल्याण के बारे में सोचता है, वो हमारी बुद्धि शिव है जो सबके भले के बारे में विचारती है और ये जो गले में पड़ा हुआ शेषनाग है ये अभिमान और अहंकार का प्रतीक है। शिव वो व्यक्ति है जो अभिमान, अहंकार का प्रतीक हो विषधर है अभिमान विष के समान है, अहंकार विष के समान है, आवेष आवे कि किस इन्सान को नहीं आता लेकिन जो गले से ऊपर उसे निकलने नहीं देता अपने ज्ञान के बल से उसे गले में ही दबाकर रखता उसे उठने नहीं देता वही व्यक्ति शिव है। अभिमान पर नियन्त्रण रावण नहीं कर पाया तो मृत्यु को प्राप्त हुआ कुलवंश सहित निमट के समाप्त हो गया। अभिमान को कंस नहीं मिटा पाया तो उसका सर्वनाश श्रीकृष्ण ने कर दिया। अभिमान को दुर्योधन नहीं मिटा पाया तो अर्जुन ने उसका नाश कर दिया पाण्डवों ने कौरवों का। अभिमान को धनानंद नहीं मिटा पाया तो चणकपुत्र चाणक्य महामति कौटिल्य ने नन्दों को जड़ से निकालकर उनका नाश कर दिया। तो जहां—जहां अभिमान पैदा होता है तो अभिमान जिसमें पैदा होता है उसका नाश करता है यदि उसने अभिमान को दबा दिया ज्ञान से, ज्ञान के बल से, धर्म से, धर्म की दृष्टि से तो वो जीत गया तो शिव वो व्यक्ति है जो अभिमान को गले से ऊपर नहीं आने देता कण्ठ, होंठ और वाणी में नहीं उतरने देता उनको भीतर ही दबा देता है। इसके अब और भी नीचे हम विचार करेंगे तो देखिये एक हाथ के अन्दर डमरू है ये डमरू बड़ा अद्भुत प्रतीक है जब सृष्टि का सृजन होता है उस समय भी एक ध्वनि होती है और जब सृष्टि का प्रलय होता है तब भी एक सृष्टि में ध्वनि होती है। डमरू की जो डम—डम है वो सृष्टि के सृजन और सृष्टि का प्रलय है, सृष्टि का निर्माण को सृष्टि का विनाश है, सृष्टि का जन्म और सृष्टि की मृत्यु है। ये सारी सृष्टि ब्रह्म का शरीर और शरीर ब्रह्म नहीं है, ब्रह्माण्ड ब्रह्म से भिन्न है जैसे पिण्ड मनुष्य का शरीर नहीं है ये पिण्ड का मनुष्य का शरीर है मनुष्य की आत्मा नहीं है। पिण्ड मरता है मनुष्य नहीं मरता आत्मा नहीं मरती। ब्रह्माण्ड मरता है परमात्मा नहीं मरता। ब्रह्माण्ड बदलता है नष्ट होता है अपने कारण में जाता है लेकिन परमात्मा की आत्मा या परमात्मा कभी नष्ट नहीं होती। वैसे ही मनुष्य का शरीर नष्ट होता है, पिण्ड नष्ट होता है, आत्मा नष्ट नहीं होती। लेकिन मनुष्य का शरीर ठीक वैसे ही जन्म लेता और नष्ट होता है जैसे ये सृष्टि कभी उत्पन्न होती और नष्ट होती। सृष्टि का कभी सृजन होता और प्रलय होता है वैसे ही मनुष्य के शरीर का भी सृजन और विनाश होता है। जैसे ब्रह्माण्ड का सृजन ब्रह्म करता है और ब्रह्माण्ड की प्रलय भी ब्रह्म करता है वैसे ही मनुष्य के शरीर का सृजन

भी ब्रह्म करता है इस पिण्ड का और इस पिण्ड का अन्तिम में नाश करके इसे वापस में कारणों में विलय भी वही ब्रह्म करता है। तो बोला की इस ब्रह्माण्ड के निर्माण से और ब्रह्माण्ड इस जगती के सृजन और इसके प्रलय और इसके जन्म और इसके मृत्यु के बारे में जिसके दिमाग में निरन्तर विचार चलता रहता है जो अपने शरीर की उत्पत्ति और विनाश के बारे में सोचता है, जो अपने शरीर के जन्म और मरण के बारे में सोचता है जो इस नौका के इस तट से उस तट के बीच की जिन्दगी के बारे में और दोनों छोरों के बारे में सोचता है। जो शरीर की उत्पत्ति और विनाश के बीच और दोनों छोरों के ऊपर फोकस करके इसकी सार्थकता पर, असार्थकता पर इसकी उपयोगिता पर विचार करता है वो व्यक्ति शिव है, वो व्यक्ति कभी किसी वस्तु में आसक्त नहीं होता जिस जीवन को निरन्तर को परिणामी, परिणाम परिवर्तनशील पाता है। जो इसको परिवर्तनशील पाता है वो कभी इसमें आसक्त नहीं होता। तो शिव वो व्यक्ति हैं, शिव वो बनता है सबके कल्याण की भावनाएं उसके भीतर पैदा होती है जिस व्यक्ति के अन्दर ये चिन्तन होता है कि जीवन नश्वर है परिवर्तनशील है, कभी भी नष्ट हो सकता है।

अश्वत्थे वो'निषदनं पूर्णे वो'वसतिष्कृता ।

गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥४॥

यजुः ३५:४

भगवान ने कहा **अश्वत्थे वो'निषदनं** – हे मानव! हे आत्मा! तुझे मैंने ऐसे शरीर में बिठाया तेरा आसन मैंने ऐसी देह में लगाया ऐसी देह नामी रथ में बिठाया है तुझे जिस रथ के, जिस शरीर के कल रहने की कोई उम्मीद नहीं अश्वत्थे। कल स्थिर रहने की जिसकी कोई उम्मीद नहीं कभी भी जा सकता है ऐसे में तेरा आसन लगाया।

पूर्णे वो'वसतिष्कृता – और जैसे पीपल के पत्त की चोंच से लटकी हुई पानी की बूंद कभी भी किसी हवा के झोंके से गिरकर धड़ाम से नष्ट हो सकती है वैसे ही तेरा और तेरी आत्मा का, वैसे ही तेरी आत्मा और तेरे शरीर का सम्बन्ध है। किसी रोग के कारण, किसी घटना, किसी एक्सीडेंट के कारण पता नहीं कब ये आत्मा से शरीर अलग हो जाये। शिव वो व्यक्ति है जो जगती के निर्माण और विधाता के इस जगत के पालन और विधाता के द्वारा इस सृष्टि के सुख देने में असमर्थ होने पर इसके विनाश के इन तीनों बिन्दुओं पर निरन्तर सोचता है जो वस्तु वस्तु की उत्पत्ति और उसके पालन और उसके विनाश के बारे में विचार करता है वो

व्यक्ति शिव है। इस चिन्तन से, इस साधना से, इस प्रकार के मनन से उस व्यक्ति की संसार और संसार की वस्तुओं में और अपने शरीर में आसक्ति नहीं होती, रोग नहीं होता, मोह नहीं होता, अपने और अपनों के शरीर में नहीं होता और ब्रह्माण्ड में और ब्रह्माण्ड की वस्तुओं में जगत और जगती की वस्तुओं में संसार और संसार के पदार्थों में आसक्ति नहीं होती वो व्यक्ति शिव है उसको शिव कहा जा रहा है।

तो कहा शिव वो हैं जो डमरू बजाता है यानि सृष्टि के आरम्भ और अन्त और मध्य का निरन्तर विचार करता रहता है इसलिए भगवान वेदव्यास ने कहा **अथातो ब्रह्म जिज्ञासा** कब ब्रह्म को जानने की इच्छा होती है बोले संसार में जब इन्सान ब्रह्म के बनाये इस ब्रह्माण्ड को देखता है जब वो रोगों से पीड़ित होता है, जब वो शोकों से सन्तुष्ट होता है, जब वो अपने ही सामने पैदा होने वालों को मरते हुए और अर्थियों पर बैठकर श्मशान में जलते हुए देखता है तो उस इन्सान के भीतर इस आश्चर्यमय इस जगत को जानने और इसके निर्माता, इसके बनाने वाले को जानने की भावना उठ खड़ी होती है **अथातो ब्रह्म जिज्ञासा** ब्रह्म को जानने की इच्छा जिसने इस ब्रह्माण्ड को बनाया है। तो शिव वो है जो ब्रह्म के विचारों में लीन है शिव उस व्यक्ति का नाम है जो सृष्टि के आरम्भ से अन्त तक का निरन्तर विचार करता रहता है। और शिव के हाथ में दूसरे हाथ में त्रिशूल है। त्रिशूल भी एक प्रतीक है, त्रिशूल में तीन शूल हैं और त्रिशूल तीन शूलों वाला एक शूल पर खड़ा हुआ है। ये जो एक शूल है जिसपर आगे त्रिशूल हैं ये वो साधक हैं, वो योगी हैं जो इन तीनों शूलों का विचार जीवन में निरन्तर करता है ये तीनों शूल ही त्रेतवाद हैं ये तीनों शूल ही तीन पदार्थ हैं आत्मा, परमात्मा और प्रकृति। जिसने इनको थाम रखा है जिसने इनपर विचार निरन्तर कर रहा है जिसके दिमाग में इनका चिन्तन चलता रहता है कि मैं आत्मा हूँ, मेरा शरीर और ये प्रकृति से उत्पन्न और ये सारा ब्रह्माण्ड ब्रह्म का शरीर है और ब्रह्म इस सारे ब्रह्माण्ड का और मेरे शरीर का निर्माता है और मैं आत्मा इस सृष्टि का भोगता हूँ और ये सारी सृष्टि भोग्य है। जो इस तीनों के बारे में, तीनों पदार्थों के बारे में निरन्तर सोचता रहता है वो व्यक्ति शिव कहलाता है वो व्यक्ति शिव बनता है। उसके भीतर जगत के, सृष्टि के कण-कण के हित के बारे में, कण-कण के कल्याण के बारे में निरन्तर भावनाओं का प्रवाह बहता रहता है वो व्यक्ति शिव है। तब व्यक्ति शिव बनता है। माला चढ़ाने से, पानी चढ़ाने से, बेलपत्र चढ़ाने से, पंचगव्य का स्नान कराने से शिव के नाम की माला फेरने

से या शिव के नाम व्रत, उपवास करने से कोई शिव नहीं बना महानुभाव न ही कोई शिव बनता सकता है। शिव के शरीर पर शिव के जो चरित्र को जो शिव के चित्र में प्रतीकों के रूप में जो अंकन किया है इन प्रतीकों को समझकर जो अपने जीवन को इस ढंग से निर्माण में लगाता है निर्माण अपने जीवन का करता है वो व्यक्ति जीवन में शिव बनता है। शिव का शरीर एक अद्भुत डायग्राम है जिसमें जीवन को शिव को बनाने की सारी चीजें, वस्तुएं विद्यमान हैं। एक-एक को पढ़ते जो, समझते जाओ और अपने आपका उसी ढंग से निर्माण करते जाओ। पूरी प्रतीमा ही एक प्रतीक है जो हमें शिक्षा दे ही है कि मेरे जैसे तुम बनो न मैं जड़ हूँ तो मेरे जैसे तुम भी जड़ हो जाओ। मैंने जो जीवन में किया है वैसे तुम करके दिखाओ और मेरे जैसे तुम भी बन जाओ, ये मूर्ति तो जड़ हैं ये प्रतिमा तो जड़ है मेरे जैसे तुम जड़ बनकर एक जगह स्थिर मत रहो। मैंने जो जीवन में क्रियाशील होकर किया है और जीवन में जिस वैभव की पराकाष्ठा को पाया है तुम भी वैसे करो और जीवन में शिव बनो और ऊपर उठो चाहे प्रतिमा किसी की भी हो राम की हो, कृष्ण की हो, दुर्गा की हो, काली की हो, ब्रह्मा की हो, विष्णु की हो, गणेश की हो, सरस्वती की हो किसी की भी हो हर प्रतिमा एक प्रतीक है और वो एक उपदेश दे रही है कि मेरे जैसे जड़ मत बनो मैंने जो जीवन में किया है वैसा तुम भी करके दिखाओ। इन महापुरुषों के चित्रों में जो इनका चरित्र अंकित है उस चरित्र को अपने जीवन के अन्दर भी विकसित करने का नाम ही पूजा है वही पूजा है। हमारे जीवन में शिवत्व आये, हमारे जीवन में भी राष्ट्र कल्याण की भावना जागे, हमारे जीवन में भी व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ने वाले पावन विचार पनपे, हमारे भावनाओं में भी गंगा की भांति औषधीय, दुखनाशक, शान्तिदायक और अमृत जैसे अमर करने वाले जीवन को आनन्दित करने वाले लोगों से हृदयों को जोड़ने वाले विचार विचारण विचरण करें और हम उप विचारों को वाणी के द्वार से बांटते रहें सबको सबको जोड़ते रहें यही भावना भगवान शिव के महाराजा शिव के जो आन्तरिक आध्यात्मिक व्यक्तित्व को इस चित्र में दिखाया गया है प्रतीकों के द्वारा उसमें निहित है मैं इस प्रकार इस चित्र से अभिप्राय लेता हूँ कि हम अपने जीवन में इस ढंग से शिव बनें आप भी प्रयास करें और अन्यो को भी ये उपदेश दें, अन्यो तक भी ये सन्देश पहुंचायें जिससे वास्तविक अर्थों में व्यक्ति भगवान शिव के पदचिह्नों पर चलें और अपने जीवन का भी आध्यात्मिक ढंग से शिव रूप में निर्माण करें। जिससे उसका व्यक्तिगत जीवन आनन्दित हो, परिवार आनन्दित हो, हमारा समाज, हमारा देश और हमारा राष्ट्र और से

सम्पूर्ण पूरा विश्व उसकी आभा से लाभान्वित हो, उसके विचारों से लाभान्वित हो, उसकी भावनाओं से लाभान्वित हो उसके कृत्य कार्यों से लाभान्वित हो, उसका जीवन सारे विश्व के लिए कल्याणकारी हो वही इन्सान शिव है वही शिव बन पाता है।

तो इस प्रकार इन भावनाओं को अपने भीतर धारण करें और निर्माण इस प्रकार करें। यही इस प्रतीक का भगवान शिव के इस चित्र का अभिप्राय है। आप सबने बहुत ध्यान से सुना आप सबका धन्यवाद है और आशा है आप अपने जीवन को अपने व्यक्तित्व को इस प्रकार से निर्मित करें जिससे अपना और सबका कल्याण हो यही वेद का परमात्मा का भी सन्देश है।

इति ओ३म् शान्ति!